|  |
| --- |
| 04. August 2024 |
| **18. Sonntag im Jahreskreis B**  |
| Erste Lesung: Ex 16,2-4.12-15; Zweite Lesung: Eph 4,17.20-24; Evangelium: Joh 6,24-35 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 409, 1-3 | Singt dem Herrn ein neues Lied |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 156 | Kyrie eleison |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 172 | Gott in der Höh |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 78,3-4b.23-24.25 u. 54 |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 657, 3 | Dein Erbarmen, o Herr |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 402, 1+3+11 | Danket Gott |
|  |  |  |
| Halleluja-Ruf: | Ruf: GL 174, 3 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Nicht nur vom Brot lebt der Mensch,* |
|  | *sondern von jedem Wort aus Gottes Mund.* |
|  |  |
| Credo: | GL 792 | Ich glaube, Herr |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 378 | Brot, das die Hoffnung nährt |
|  | GL 421, 1+3 | Mein Hirt ist Gott der Herr |
|  | GL 422, 1-3! | Ich steh vor dir |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 196 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 209 | Du teilst es aus |
|  | GL 498, 1+3! | Das Heil der Welt |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 211, 1-3 | Wir rühmen dich, König |
|  | GL 213, 1+4 | O heilge Seelenspeise |
|  | GL 216, 1+2 | Im Frieden dein |
|  | GL 357, 1+2! | Wie schön leuchtet der Morgenstern |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 453, 1!-4 | Bewahre uns, Gott |
|  | GL 484, 1+2! | Dank sei dir, Vater |
|  | GL 405, 1-3 | Nun danket alle Gott |